पानी की पुकार

जो देश की सीमा न जाने, प्रदेश में उसको बॉट रहे।
ये कर्नाटक, ये तमिलनाडु, आन्ध्र का पानी छॉट रहे।।

क्यों विवश किया बॅटवारे को, मैनें कटुम्ब वसुधा जानी।
यह भारत है, या पाकिस्तान, मैने कभी सीमा नहीं मानी।।
धर रुप बादलों का मैनें, संसार का भ्रमण कर डाला,
आज देश के अन्दर ही, विवादों में मुझको फॉस रहे।
जो देश की सीमा ना जाने प्रदेश में उसको बॉट रहे।।

हैं, रुप अनेक यहॉ मेरे, उनको तुमको समझाता हूं।
हुए दुर्भाव दिलों में पैदा क्यों, उन सबको आज मिटाता हूं।।
नदी रुप बिटिया का है, पालन पोषण तो पिता करें।
हो जवान बिटिया रानी, किसी और का घर आबाद करे।।
फिर आज मनों से अपने तुम, बेटी के भाव को छॉट रहे।
जो देश की समा न जाने, प्रदेश में उसको बॉट रहे।।

समुद्र रुप पिता का है, नहीं भेद किसी में जाना है।
हर देश को मैने बेटी की मूरत में पहचाना है।।
फिर प्यास बुझाने बेटों की, जल चहुं ओर मै भेज रहा।
कोइ ना प्यासा रहे धरा पर, एक यही संकल्प मेरा।।
संताप एक यही मुझको, मुझे सीमाओं से पाट रहे।
जो देश की सीमा न जाने, प्रदेश में उसको बॉट रहे।।

भूमि जल तो माता है, बिना दिखावा प्यार करे।
अपना दूध पिलाकर माता, सन्तानों का पेट भरे।।
इसी रुप में मैने भी, अमृत पान कराया है।
जब सारे स्रोत हुए प्रदूषित, मैने जीवन को बचाया है।।
क्यों चीर-चीर सीना मेरा, कचरे से इसको पाट रहे।
जो देश की सीमा न जाने, प्रदेश में उसको बॉट रहे।।

छोटे मोटे नाले पोखर, ये बाल रुप में धारे हैं।
थोड़े से इठलाय उठे, मन के सच्चे प्यारे हैं।।
ये ही छोटे आगे चलकर, कर्णधार बन जाते हैं।
जल स्तर बढ़ाने में अपनी, अहम भूमिका निभाते हैं।।
ना समझ हो ताल पोखरों को, गलती से हमे ही पाट रहे।
जो देश की सीमा न जाने, प्रदेश में उसको बॉट रहे।।

मुकेश कुमार शर्मा, क. अ. (सिविल)